WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN
Volume-1, Issue-1, No. 1, Jan 2025
ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

डॉ. भीमराव अम्बेडकर: समावेशी शिक्षा और भारत में सामाजिक परिवर्तन के पीछे प्रेरक शक्ति

प्रो.(डॉ.) उषा खण्डेलवाल, डीन-प्राकृतिक चिकित्सा, एवं योगविज्ञान विभाग,विभाग अध्यक्ष दर्शन शास्त्र , एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह(म. प्र.)

सरांश:

डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जिन्हें प्यार से बाबासाहेब अम्बेडकर के नाम से जाना जाता है, एक दूरदर्शी नेता, कानूनी विशेषज्ञ और सामाजिक परिवर्तन के समर्थक थे, जिन्होंने समकालीन भारत के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। निष्पक्षता, समानता और वंचित समूहों की उन्नति को बढ़ावा देने के प्रति उनके अटूट समर्पण का भारतीय समाज पर गहरा और स्थायी प्रभाव रहा है। यह लेख सुलभ शिक्षा को बढ़ावा देने और भारत में सामाजिक परिवर्तन लाने में डॉ. अम्बेडकर के प्रयासों पर प्रकाश डालता है, उनके अभूतपूर्व प्रयासों और स्थायी प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal

परिचय:

डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जिन्हें बाबासाहेब अम्बेडकर के नाम से जाना जाता है, भारतीय इतिहास में एक महान व्यक्ति थे, जिन्हें सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के प्रति उनके अथक प्रयासों के लिए सम्मानित किया जाता था। आधुनिक भारत के वास्तुकार के रूप में, देश के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक परिदृश्य पर उनका प्रभाव गहरा और स्थायी है। यह शोध पत्र भारत में समावेशी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के वास्तुकार के रूप में डॉ. अम्बेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है।

महार जाति के एक परिवार में जन्मे, जिसे औपनिवेशिक भारत की कठोर जाति व्यवस्था में अछूत माना जाता था, डॉ. अंबेडकर ने जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार की क्रूरताओं का प्रत्यक्ष अनुभव किया। हालाँकि, ज्ञान की तीव्र इच्छा और अवज्ञा की अथक भावना से प्रेरित होकर,

उन्होंने इन बाधाओं को पार कर अपने समय के सबसे शिक्षित और प्रभावशाली नेताओं में से एक बन गए।

शिक्षा डॉ. अम्बेडकर के सशक्तिकरण के दर्शन की आधारशिला थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक असमानताओं से लड़ने और समाज के हाशिये पर पड़े वर्गों के उत्थान के लिए शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है। डॉ. अम्बेडकर की अपनी शैक्षणिक यात्रा उल्लेखनीय थी, जिसकी परिणति भारत और विदेश दोनों में प्रतिष्ठित संस्थानों में कानून और अर्थशास्त्र में उच्च अध्ययन के साथ हुई।

डॉ. अम्बेडकर की समावेशी शिक्षा की दृष्टि केवल स्कूलों और कॉलेजों तक पहुंच से आगे तक फैली हुई थी। उन्होंने एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली की कल्पना की जो न केवल ज्ञान प्रदान करेगी बल्कि समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के मूल्यों को भी स्थापित करेगी। भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में, डॉ. अम्बेडकर ने यह सुनिश्चित किया कि शिक्षा सभी नागरिकों के लिए एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित हो, चाहे उनकी जाति, पंथ या लिंग कुछ भी हो।

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN An International Multidisciplinary Research Journal

शिक्षा में अपने योगदान के अलावा, डॉ. अम्बेडकर सामाजिक परिवर्तन के लिए एक अथक योद्धा थे। उन्होंने अस्पृश्यता के उन्मूलन, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों के लिए अथक संघर्ष किया। उनके प्रयासों की परिणति भारतीय संविधान के निर्माण में हुई, जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों का प्रतीक है।

डॉ. अम्बेडकर की विरासत भारतीयों और दुनिया भर के लोगों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है। सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण पर उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके जीवनकाल में थीं। जैसा कि हम उनकी विरासत का स्मरण करते हैं, समावेशी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के उनके दृष्टिकोण पर विचार करना और आज हमारे समाज में इसे साकार करने का प्रयास करना आवश्यक है।

शिक्षा और सशक्तिकरण:

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जीवन शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है। भारी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने अटूट दृढ़ संकल्प के साथ शिक्षा प्राप्त की और अंततः विदेशी विश्वविद्यालय से कानून में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल करने वाले तथाकथित "अछूत" जातियों के पहले व्यक्ति बन गए। डॉ. अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सामाजिक भेदभाव और असमानता की जंजीरों से मुक्त कराने की कुंजी है।

अपने पूरे जीवन में, डॉ. अम्बेडकर ने व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाने में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करती है बल्कि आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और गरिमा की भावना भी पैदा करती है। डॉ. अम्बेडकर के लिए, शिक्षा का अर्थ केवल शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करना नहीं था; यह दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने और बदलाव की वकालत करने के लिए खुद को उपकरणों से लैस करने के बारे में था।

डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक दर्शन समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों में गहराई से निहित था। उन्होंने सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की वकालत की, चाहे उनकी जाति, धर्म या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उनका मानना था कि शिक्षा वंचितों के उत्थान और उन्हें सम्मानजनक और पूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाने का एक साधन होनी चाहिए।

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal

भारत के संविधान के प्रमुख वास्तुकार के रूप में, डॉ. अम्बेडकर ने यह सुनिश्चित किया कि शिक्षा सभी नागरिकों के लिए एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित हो। उन्होंने शैक्षिक नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य समावेशिता को बढ़ावा देना और विशेषाधिकार प्राप्त और हाशिए पर मौजूद लोगों के बीच की खाई को पाटना था। शिक्षा के बारे में डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण समग्र था, जिसमें न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता बल्कि नैतिक और नैतिक मूल्य भी शामिल थे।

डॉ. अम्बेडकर की स्वयं की शैक्षिक उपलब्धियाँ भारत के लाखों उत्पीड़ित व्यक्तियों के लिए आशा की किरण के रूप में काम करती हैं। उनकी जीवन कहानी छात्रों की पीढ़ियों, विशेष रूप से हाशिए

पर रहने वाले समुदायों के छात्रों को शिक्षा को सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करती रहती है।

अंततः डॉ. भीमराव अम्बेडकर की समावेशी शिक्षा और सशक्तिकरण की वकालत का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर उनकी शिक्षाएं दुनिया भर के लोगों के साथ गूंजती रहती हैं, जो हमें अधिक न्यायपूर्ण, न्यायसंगत और समावेशी समाज बनाने में शिक्षा के महत्व की याद दिलाती हैं।

सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण:

सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए डॉ. अम्बेडकर का समर्पण सिर्फ शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से कहीं आगे तक फैला हुआ था। उन्होंने हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने और समाज के सभी पहलुओं, चाहे वह सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक हो, में उनके एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लक्ष्य के साथ कई अभियानों और परियोजनाओं का नेतृत्व किया। अस्पृश्यता उन्मूलन, लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने और मजदूरों और कृषि श्रमिकों के अधिकारों की वकालत करने में उनके योगदान ने एक अधिक विविध और निष्पक्ष समाज के लिए आधार तैयार किया।

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN An International Multidisciplinary Research Journal

विरासत और समकालीन प्रासंगिकता:

डॉ. अंबेडकर की समावेशी शिक्षा की दृष्टि भारत में शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को आकार देना जारी रखती है, जो सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है। सभी छात्रों को उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना समान अवसर प्रदान करने में उनका विश्वास, उनके शैक्षिक दर्शन का एक बुनियादी पहलू है। इसके अतिरिक्त, भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका ने देश के कानूनी और राजनीतिक परिदृश्य पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि भारत के लोकतांत्रिक शासन में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों को बरकरार रखा गया है। आज के भारत में, डॉ. अम्बेडकर की शिक्षाएँ और सिद्धांत सामाजिक न्याय और समानता के आंदोलनों के केंद्र में हैं, विशेष रूप से जाति उन्मूलन, सामाजिक सुधार और हाशिए पर रहने वाले

समुदायों के सशक्तिकरण पर चर्चा में। शिक्षा की शक्ति पर उनका जोर, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिए, सामाजिक असमानताओं को दूर करने और एक अधिक न्यायपूर्ण समाज बनाने के प्रयासों को आगे बढ़ाता है। डॉ. अंबेडकर के सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक सामाजिक न्याय और समानता के लिए उनकी वकालत थी, विशेष रूप से अस्पृश्यता को खत्म करने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए समानता को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों में। अधिक समावेशी और समतावादी समाज के लिए उनकी निरंतर खोज कार्यकर्ताओं, नीति निर्माताओं और समाज सुधारकों को एक न्यायपूर्ण दुनिया की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती रहती है। डॉ. भीमराव अंबेडकर की विरासत का स्थायी प्रभाव भारत और उसके बाहर सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण को लेकर चल रही बातचीत में देखा जा सकता है। समावेशी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन पर उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं, जो समानता और न्याय की वकालत करने वाले व्यक्तियों और आंदोलनों के लिए एक रोडमैप प्रदान करती हैं।

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal

निष्कर्ष:

भारत में समावेशी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान अद्वितीय है। समानता, न्याय और सशक्तिकरण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने भारतीय समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है। जैसा कि हम उनकी विरासत का स्मरण करते हैं, यह जरूरी है कि हम उनके आदर्शों को कायम रखें और वास्तव में समावेशी और समतावादी समाज के उनके दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में काम करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अम्बेडकर, बी.आर. (1945),जाति का विनाश.
2. कीर, डी. (1954),डॉ. अम्बेडकर: जीवन और मिशन।
3. थोराट, एस., और उमाकांत, ए. (सं.). (2017), अम्बेडकर स्पीच: खंड-1.
4. ज़ेलियट, ई., और मून, वी. (सं.). (2005), डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर: लेखन और भाषण, खंड-3.

5. बी.आर. द्वारा "जाति का उन्मूलन",अम्बेडकर

6. धनंजय कीर द्वारा "डॉ. अम्बेडकर: जीवन और मिशन".

7. "डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर: लेखन और भाषण" (कई खंड) वसंत मून और एलेनोर ज़ेलियट द्वारा संपादित.

8. बी.आर. द्वारा "वेटिंग फ़ॉर अ वीज़ा" अम्बेडकर.

9. वेलेरियन रोड्रिग्स द्वारा संपादित "द एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ बी.आर. अम्बेडकर".

World View Research Bulletin

(An International Multidisciplinary Research Journal)

Open Access Journal -ISSN: 3107-4243 (Online) | www.wrb.education| editor@wrb.education | Impact Factor

CERTIFICATE OF PUBLICATION

The board OF World View Research Bulletin is hereby awarding this certificate

to प्रो.(डॉ.) उषा खण्डेलवाल

WORLD VIEW
RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal

In recognition of the publication of the paper

titled डॉ. भीमराव अम्बेडकर: समावेशी शिक्षा और भारत में सामाजिक परिवर्तन के पीछे प्रेरक शक्ति

PUBLISHED IN
VOLUME 1, ISSUE 2 (JUNE-SEP 2025)

Paper Id-

Chief Editor (CE)

World View Research Bulletin ISSN: 3107-4243